शिक्षित महिलाओं में बेरोजगारी

शम्स आमना महबूब

शक्षित महिलाओं में व्याप्त बेरोजगारी को कसें तो स्पष्ट होता है कि एक ओर बेरोजगारी के फलस्वरूप अपराध मानसिक तनाव, निर्धनता, दुर्व्यसन, संघर्षों की प्रवृत्ति से वैयक्तिक विघटन होता है तो दूसरी ओर यही समस्या बाद में सामाजिक विघटन को प्रोत्साहित करती है। एक बेरोजगार व्यक्ति जब अपने और परिवार के दूसरे सदस्यों की आवश्यकताओं को पूर्ण नहीं कर पाती है तो वह समाज के प्रति हिंसक बन जाता है। यह स्थिति वतन और क्रान्ति के लिए भी उत्तरदायी होता है। अर्थात् महिलाओं में व्याप्त बेरोजगारी की दशा आज हमारी परम्परागत मूल्यों पर आधारित परिवार तथा समाज के लिए खतरा उत्पन्न बन गयी है। यदि इसके सुधार के लिए ठोस कदम नहीं उठाये गये तो गंभीर परिणाम सामने आ सकती है। रीता सिन्हा की मान्यता है कि जिस प्रकार स्त्री शिक्षा का विकास हो रहा है। मंहगाई बढ़ रही है, दहेज की समस्या गंभीर होती जा रही है, इन परिस्थितियों के कारण महिलाओं के द्वारा नौकरी करने की प्रवृति में तीव्र गति से वृद्धि हो रही है। चूंकि वे कई कारणों से बेरोजगारी की दशा से गुजर रही है तो इसका प्रभाव समाज तथा परिवार पर अवश्य पड़ेगा। चूंकि बेकारी की समस्या का संबंध मानसिक विधान से भी है इसलिए यह अनेक प्रकार की समस्याओं को जन्म दे सकता है।